पाठ - 19

महात्मा ज्योतिबा फुले

विद्या बिना मति गयी, मति बिना गति गईं

नीति बिना गति गयी, गति बिना वित्त गया।

वित्त बिना शूद्र गए, इतने अनर्थ, एक अविद्या ने किए।

महात्मा ज्योतिबा को 19 वीं सदी का प्रमुख समाज सेवक माना जाता है। उन्होंने भारतीय समाज में फैली अनेक कुरीतियों को दूर करने के लिए सतत् संघर्ष किया। अछूतोद्धार, नारी-शिक्षा, विधवा-विवाह और किसानों के हित के लिए ज्योतिबा ने उल्लेखनीय कार्य किया है। उनका जन्म 1827 ई0 में हुआ था। एक वर्ष की अवस्था में ही इनकी माता का निधन हो गया था। ज्योतिबा का लालन-पालन सगुणाबाई नामक एक दाई ने किया। सगुणाबाई ने ज्योतिबा को माँ की ममता और प्यार दिया।

सात वर्ष की आयु में ज्योतिबा को गाँव के स्कूल में पढ़ने भेजा गया। जातिगत भेद-भाव के कारण उन्हें विद्यालय छोड़ना पड़ा। स्कूल छोड़ने के बाद भी उनमें पढ़ने की ललक बनी रही। सगुणाबाई ने बालक ज्योतिबा को घर में ही पढ़ने में मदद की। घरेलू कार्यों के बाद जो समय बचता उसमें वह किताबें पढ़ते थे। ज्योतिबा पास-पड़ोस के बुजुर्गों से विभिन्न विषयों में चर्चा करते थे। लोग उनकी सूक्ष्म और तर्क संगत बातों से बहुत प्रभावित होते थे।

अरबी-फारसी के विद्वान गफ्फार बेग मुंशी एवं फादर लिजीट साहब ज्योतिबा के पड़ोसी थे। उन्होंने बालक ज्योतिबा की प्रतिभा एवं शिक्षा के प्रति उसकी रुचि देखकर उसे पुनः विद्यालय भेजने का प्रयास किया। उन्हें एक बार फिर स्कूल भेजा गया। वह स्कूल में सदा प्रथम आते रहे। धर्म पर टीका-टिप्पणी सुनने पर उनके अन्दर जिज्ञासा हुई कि हिन्दू धर्म में इतनी विषमता क्यों है ? जाति-भेद और वर्ण व्यवस्था क्या है ? वह अपने मित्र सदाशिव बल्लाल गोवंडे के साथ समाज, धर्म और देश के बारे में चिन्तन किया करते। उन्हें इस प्रश्न का उत्तर नहीं सूझता कि इतना बड़ा देश गुलाम क्यों है ? गुलामी से उन्हें नफरत होती थी। उन्होंने महसूस किया कि जातियों और पंथों पर बँटे इस देश का सुधार तभी सम्भव है जब लोगों की मानसिकता में सुधार होगा।

उस समय समाज में वर्ग-भेद अपनी चरम सीमा पर था। स्त्री और दलित वर्ग की दशा अच्छी नहीं थी। उन्हें शिक्षा से वंचित रखा जाता था। ज्योतिबा को इस स्थिति पर बड़ा दुःख होता था। उन्होंने स्त्री और दलितों की शिक्षा के लिए सामाजिक संघर्ष का बीड़ा उठाया। उनका मानना था कि-"माताएँ जो संस्कार बच्चों पर डालती हैं उसी में उन बच्चों के भविष्य के बीज होते हैं।" इसलिए लड़कियों को शिक्षित करना आवश्यक है।

उन्होंने निश्चय किया कि वह वंचित वर्ग की शिक्षा के लिए स्कूलों का प्रबन्ध करेंगे। उस समय जाति-पाँति, ऊँच-नीच की दीवारें बहुत ऊँची थीं। दलितों एवं स्त्रियों की शिक्षा के रास्ते बन्द थे। ज्योतिबा इस व्यवस्था को तोड़ने हेतु दलितों और लड़कियों को अपने घर में पढ़ाते थे। वह बच्चों को छिपाकर लाते और वापस पहुँचाते थे। जैसे-जैसे उनके समर्थक बढ़े उन्होंने खुलेआम स्कूल चलाना प्रारम्भ कर दिया।

स्कूल प्रारम्भ करने के बाद ज्योतिबा को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उनके विद्यालय में पढ़ाने को कोई तैयार न होता। कोई पढ़ाता भी तो सामाजिक दबाव में उसे जल्दी ही यह कार्य बन्द करना पड़ता। इन स्कूलों में पढ़ाये कौन ? यह एक गंभीर समस्या थी। ज्योतिबा नें इस समस्या के हल हेतु अपनी पत्नी सावित्री को पढ़ना सिखाया

और फिर मिशनरीज के नार्मल स्कूल में प्रशिक्षण दिलाया। प्रशिक्षण के बाद वह भारत की प्रथम प्रशिक्षित महिला शिक्षिका बनीं।

उनके इस कार्य से समाज के लोग कुपित हो उठे। जब सावित्री बाई स्कूल जातीं तो लोग उनको तरह-तरह से अपमानित करते, परंतु वह महिला अपमान का घूँट पीकर भी अपना कार्य करती रहीं। इस पर लोगों ने ज्योतिबा को समाज से बहिष्कृत करने की धमकी दी और उन्हें उनके पिता के घर से बाहर निकलवा दिया। गृह त्याग के बाद पति-पत्नी को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, परंतु वह अपने लक्ष्य से डिगे नहीं।

अंधेरी काली रात थी। बिजली चमक रही थी। महात्मा ज्योतिबा को घर लौटने में देर हो गई थी। वह सरपट घर की ओर बढ़े जा रहे थे। बिजली चमकी उन्होंने देखा आगे रास्ते में दो व्यक्ति हाथ मंे चमचमाती तलवारें लिए जा रहे हैं। वह अपनी चाल तेज कर उनके समीप पहुँचे। महात्मा ज्योतिबा ने उनसे उनका परिचय व इतनी रात में चलने का कारण जानना चाहा। उन्होंने बताया हम ज्योतिबा को मारने जा रहे हैं। महात्मा ज्योतिबा ने कहा-उन्हें मार कर तुम्हें क्या मिलेगा? उन्होंने कहा-पैसा मिलेगा, हमें पैसे की आवश्यकता है। महात्मा ज्योतिबा ने क्षण भर सोचा फिर कहा-‘मुझे मारो, मैं ही ज्योतिबा हूँ, मुझे मारने से यदि तुम्हारा हित होता है, तो मुझे खुशी होगी। इतना सुनते ही उनकी तलवारें हाथ से छूट गई। वह ज्योतिबा के चरणों में गिर पड़े। फिर उनके शिष्य भी बने।

महात्मा ज्योतिबा फुले ने ‘सत्य शोधक समाज’ नामक संगठन की स्थापना की। सत्य

शोधक समाज उस समय के अन्य संगठनों से अपने सिद्धान्तों व कार्यक्रमों के कारण भिन्न था। सत्य शोधक समाज पूरे महाराष्ट्र में शीघ्र ही फैल गया। सत्य शोधक समाज के लोगों ने जगह-जगह दलितों और लड़कियों की शिक्षा के लिए स्कूल खोले। छुआ-छूत का विरोध किया। किसानों के हितों की रक्षा के लिए आन्दोलन चलाया।

महात्मा ज्योतिबा व उनके संगठन के संघर्ष के कारण सरकार ने ‘एग्रीकल्चर एक्ट’ पास किया।

धर्म, समाज और परम्पराओं के सत्य को सामने लाने हेतु उन्होंने अनेक पुस्तकें भी लिखी। 28 नवम्बर सन् 1890 ई0 को उनका देहावसान हो गया।

जीवन भर गरीबों, दलितों व महिलाओं के लिए संघर्ष करने वाले इस सच्चे नेता को जनता ने आदर से 'महात्मा' की पदवी से विभूषित किया। उन्हें समाज के सशक्त प्रहरी के रूप में सदैव याद किया जाता रहेगा।

ज्योतिबा द्वारा लिखी गयी प्रमुख पुस्तकें-

- तृतीय रत्न
- छत्रपति शिवाजी
- राजा भोसला का पखड़ा
- ब्राह्मणों का चातुर्य
- किसान का कोड़ा
- अछूतों की कैफियत

अभ्यास

1. महात्मा ज्योतिबा फुले का जन्म कब और कहाँ हुआ ?

2. उन्होंने भारत की गुलामी का क्या कारण माना ?

3. ज्योतिबा को उनके पिता के घर से बाहर क्यों निकलवा दिया गया ?

4. किस घटना ने ज्योतिबा को सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध लड़ने को प्रेरित किया ?

5. महात्मा ज्योतिबा ने दलितों और स्त्रियों के सम्मान हेतु क्या-क्या कार्य किए ?

6. निम्नलिखित अधूरे वाक्यों को पूरा कीजिए -

   क. वे अपने मित्र सदाशिव बल्लाल गोवंडे के साथ ....

   ख. उन्होंने तय किया कि जिन वर्गों के लिए शिक्षा ....

   ग. महात्मा ज्योतिबा फुले ने 'सत्य..............................'

   घ. महात्मा ज्योतिबा द्वारा किसानों के हितों के लिए किए गए संघर्ष के फलस्वरूप ......

7. महात्मा ज्योतिबा फुले द्वारा लिखित पुस्तकों की सूची बनाइए।

8. सही विकल्प छाँटकर लिखिए-

ज्योतिबा की हत्या के लिए भेजे गए लोग उनके शिष्य बन गए क्योंकि-

- वे महात्मा ज्योतिबा से डर गए थे।
- महात्मा ज्योतिबा ने उन्हें लालच दिया था।
- वे उनके विचारों से प्रभावित हो गए थे।